पञ्चमः पाठः

# बुद्धिर्बलवती सदा

प्रस्तुत पाठ शुकसप्ततिः नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इसमें अपने दो छोटे-छोटे पुत्रों के साथ जंगल के रास्ते से पिता के घर जा रही बुद्धिमती नामक नारी के बुद्धिकौशल को दिखाया गया है जो सामने आए हुए शेर को डरा कर भगा देती है। इस कथाग्रन्थ में नीतिनिपुण शुक और सारिका की कहानियों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सद्वृत्ति का विकास कराया गया है।

**अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्ट्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद–"कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।"**

**इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।**

© NCERT not to be republished

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी।
अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः शृगालः हसन्नाह– "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"

व्याघ्रः- गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः।

शृगालः- व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?

व्याघ्रः- प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा।

जम्बुकः- स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। व्याघ्र! तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।

व्याघ्रः- शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।

जम्बुकः- यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथाकृत्वा काननं ययौ। शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती

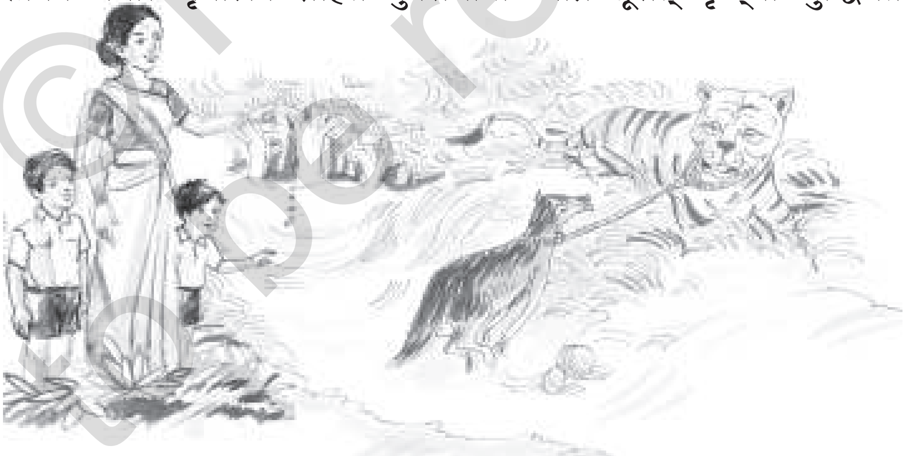

चिन्तितवती-जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच–

रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा।
विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥

इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा।
व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धश्रृगालकः॥

एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव उच्यते-

बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा॥

## शब्दार्थाः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **भार्या** | – | पत्नी | – | पत्नी |
| **पुत्रद्वयोपेता** | – | पुत्रद्वयेन सहिता | – | दोनों पुत्रों के साथ |
| **उपेता** | – | युक्ता | – | युक्त |
| **कानने** | – | वने | – | जंगल में |
| **ददर्श** | – | अपश्यत् | – | देखा |
| **धाष्ट्र्यात्** | – | धृष्टभावात् | – | ढिठाई से |
| **चपेटया** | – | करप्रहारेण | – | थप्पड़ से |
| **प्रहृत्य** | – | चपेटिकां दत्वा | – | थप्पड़ मारकर |
| **जगाद** | – | उक्तवती | – | कहा |
| **कलहम्** | – | विवादम् | – | झगड़ा |
| **विभज्य** | – | विभक्तं कृत्वा | – | अलग-अलग करके (बाँटकर) |
| **लक्ष्यते** | – | अन्विष्यते | – | देखा जाएगा, ढूँढ़ा जाएगा |
| **व्याघ्रमारी** | – | व्याघ्रं मारयति (हन्ति) इति | – | बाघ को मारने वाली |
| **नष्टः** | – | मृतः, पलायितः | – | भाग गया |
| **भामिनी** | – | भामिनी, रूपवती स्त्री | – | रूपवती स्त्री |
| **जम्बुकः** | – | श्रृगालः | – | सियार |

© NCERT not to be republished

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **गूढप्रदेशम्** | – | गुप्तप्रदेशम् | – | गुप्त प्रदेश में |
| **गृहीतकरजीवितः** | – | हस्ते प्राणान्नीत्वा | – | हथेली पर प्राण लेकर |
| **आवेदितम्** | – | विज्ञापितम् | – | बताया |
| **प्रत्यक्षम्** | – | समक्षम् | – | सामने |
| **सात्मपुत्रौ** | – | सा आत्मनः पुत्रौ | – | वह अपने दोनों पुत्रों को |
| **एकैकशः** | – | एकम् एकं कृत्वा | – | एक एक करके |
| **अत्तुम्** | – | भक्षयितुम् | – | खाने के लिए |
| **कलहायमानौ** | – | कलहं कुर्वन्तौ | – | झगड़ा करते हुए (दो) को |
| **प्रहरन्ती** | – | प्रहारं कुर्वन्ती | – | मारती हुई |
| **ईक्षते** | – | पश्यति | – | देखती है |
| **वेला** | – | समयः | – | शर्त |
| **आक्षिपन्ती** | – | आक्षेपं कुर्वन्ती | – | आक्षेप करती हुई, झिड़कती हुई, भर्त्सना करती हुई |
| **तर्जयन्ती** | – | तर्जनं कुर्वन्ती | – | धमकाती हुई, डाँटती हुई |
| **विश्वास्य** | – | समाश्वस्य | – | विश्वास दिलाकर |
| **तूर्णम्** | – | शीघ्रम् | – | जल्दी, शीघ्र |
| **भयङ्करा** | – | भयं करोति इति | – | भयोत्पादिका |
| **गलबद्ध-शृगालकः** | – | गले बद्ध शृगालः यस्य सः | – | गले में बंधे हुए शृगाल वाला |

**अन्तिमस्य श्लोकस्य अन्वयः-**

रे रे धूर्त! त्वया मह्यं पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य (अपि) अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद। इति उक्त्वा भयङ्करा व्याघ्रमारी तूर्णं धाविता। गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः अपि सहसा नष्टः। हे तन्वि! सर्वदा सर्वकार्येषु बुद्धिर्बलवती।

© NCERT not to be republished

# अभ्यासः

**1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

(क) बुद्धिमती केन उपेता पितृगृहं प्रति चलिता?
(ख) व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः?
(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते?
(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति?
(ङ) बुद्धिमती शृगालं किम् उक्तवती?

**2. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) तत्र **राजसिंहो** नाम राजपुत्रः वसति स्म।
(ख) बुद्धिमती **चपेटया** पुत्रौ प्रहृतवती।
(ग) **व्याघ्रं** दृष्ट्वा धूर्तः शृगालः अवदत्।
(घ) त्वं **मानुषात्** विभेषि।
(ङ) पुरा त्वया **मह्यं** व्याघ्रत्रयं दत्तम्।

**3. उदाहरणमनुसृत्य कर्तरि प्रथमा विभक्तेः क्रियायाञ्च 'क्तवतु' प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–**

**यथा**–तया अहं हन्तुम् आरब्धः – सा मां हन्तुम् आरब्धवती।
(क) मया पुस्तकं पठितम्। – ..........................................
(ख) रामेण भोजनं कृतम्। – ..........................................
(ग) सीतया लेखः लिखितः। – ..........................................
(च) अश्वेन तृणं भुक्तम्। – ..........................................
(ङ) त्वया चित्रं दृष्टम्। – ..........................................

**4. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण संयोजयत–**

(क) व्याघ्रः व्याघ्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः।
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा शृगालं आक्षिपन्ती उवाच।

© NCERT not to be republished

(ग) जम्बुककृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्।
(घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रं अपश्यत्।
(ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच-अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यत।
(च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
(छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयं आनयितुं' प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्।
(ज) गलबद्धश्रृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः।

**5. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–**

(क) पितुर्गृहम् – .................. + ..................
(ख) एकैकः – .................. + ..................
(ग) .................. – अन्यः + अपि
(घ) .................. – इति + उक्त्वा
(ङ) .................. – यत्र + आस्ते

**6. (क) अधोलिखितानां पदानाम् अर्थः कोष्ठकात् चित्वा लिखत-**

(क) ददर्श – (दर्शितवान्, दृष्टवान्)
(ख) जगाद – (अकथयत्, अगच्छत्)
(ग) ययौ – (याचितवान्, गतवान्)
(घ) अत्तुम् – (खादितुम्, आविष्कर्तुम्)
(ङ) मुच्यते – (मुक्तो भवति, मग्नो भवति)
(च) ईक्षते – (पश्यति, इच्छति)

**(ख) पाठात् चित्वा पर्यायपदं लिखत–**

(क) वनम् – ................
(ख) श्रृगालः – ................
(ग) शीघ्रम् – ................
(घ) पत्नी – ................
(ङ) गच्छसि – ................

© NCERT not to be republished

7. **प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–**

(क) चलितः – ................

(ख) नष्टः – ................

(ग) आवेदितः – ................

(घ) दृष्टः – ................

(ङ) गतः – ................

(च) हतः – ................

(छ) पठितः – ................

(ज) लब्धः – ................

**परियोजनाकार्यम्**

बुद्धिमत्याः स्थाने आत्मानं परिकल्प्य तद्भावनां स्वभाषया लिखत।

## योग्यताविस्तारः

**भाषिकविस्तारः**

ददर्श–दृश् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

विभेषि 'भी' धातु, लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

प्रहरन्ती – प्र + हृ धातु, शतृ प्रत्यय, स्त्रीलिङ्ग।

गम्यताम् – गम् धातु, कर्मवाच्य, लोट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

ययौ – 'या' धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

यासि – गच्छसि।

**समास**

गलबद्ध शृगालकः – गले बद्धः शृगालः यस्य सः।

प्रत्युत्पन्नमतिः – प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः।

जम्बुककृतोत्साहात् – जम्बुकेन कृतः उत्साहः – जम्बुककृतोत्साहः तस्मात्।

पुत्रद्वयोपेता – पुत्रद्वयेन उपेता।

भयाकुलचित्तः – भयेन आकुलः चित्तम् यस्य सः।

© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| व्याघ्रमारी | – | व्याघ्रं मारयति इति। |
| गृहीतकरजीवितः | – | गृहीतं करे जीवितं येन सः। |
| भयङ्करा | – | भयं करोति या इति। |

**ग्रन्थ-परिचय** – शुकसप्ततिः के लेखक और काल के विषय में यद्यपि भ्रान्ति बनी हुई है, तथापि इसका काल 1000 ई. से 1400 ई. के मध्य माना जाता है। हेमचन्द्र ने (1088-1172) में शुकसप्ततिः का उल्लेख किया है। चौदहवीं शताब्दी में फारसी भाषा में 'तूतिनामह' नाम से अनूदित हुआ था।

शुकसप्ततिः का ढाँचा अत्यन्त सरल और मनोरंजक है। हरिदत्त नामक सेठ का मदनविनोद नामक एक पुत्र था। वह विषयासक्त और कुमार्गगामी था। सेठ को दुःखी देखकर उसके मित्र त्रिविक्रम नामक ब्राह्मण ने अपने घर से नीतिनिपुण शुक और सारिका लेकर उसके घर जाकर कहा-इस सपत्नीक शुक का तुम पुत्र की भाँति पालन करो। इसका संरक्षण करने से तुम्हारा दुख दूर होगा। हरिदत्त ने मदनविनोद को वह तोता दे दिया। तोते की कहानियों ने मदनविनोद का हृदय परिवर्तन कर दिया और वह अपने व्यवसाय में लग गया।

व्यापार प्रसंग में जब वह देशान्तर गया तब शुक अपनी मनोरंजक कहानियों से उसकी पत्नी का तब तक विनोद करता रहा जब तक उसका पति वापस नहीं आ गया। संक्षेप में शुकसप्ततिः अत्यधिक मनोरंजक कथाओं का संग्रह है।

**हन् (मारना) धातोः रूपम्।**

**लट्लकारः**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| **प्रथमपुरुषः** | हन्ति | हतः | घ्नन्ति |
| **मध्यमपुरुषः** | हन्सि | हथः | हथ |
| **उत्तमपुरुषः** | हन्मि | हन्वः | हन्मः |

**लृट्लकारः**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| **प्रथमपुरुषः** | हनिष्यति | हनिष्यतः | हनिष्यन्ति |
| **मध्यमपुरुषः** | हनिष्यसि | हनिष्यथः | हनिष्यथ |
| **उत्तमपुरुषः** | हनिष्यामि | हनिष्यावः | हनिष्यामः |

© NCERT not to be republished

### लङ्लकारः

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| **प्रथमपुरुषः** | अहन् | अहताम् | अहनन् |
| **मध्यमपुरुषः** | अहः | अहतम् | अहत |
| **उत्तमपुरुषः** | अहनम् | अहन्व | अहन्म |

### लोट्लकारः

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| **प्रथमपुरुषः** | हन्तु | हताम् | घ्नन्तु |
| **मध्यमपुरुषः** | जहि | हतम् | हत |
| **उत्तमपुरुषः** | हनानि | हनाव | हनाम |

### विधिलिङ्लकारः

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| **प्रथमपुरुषः** | हन्यात् | हन्याताम् | हन्युः |
| **मध्यमपुरुषः** | हन्याः | हन्यातम् | हन्यात |
| **उत्तमपुरुषः** | हन्याम् | हन्याव | हन्याम |

© NCERT not to be republished